शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक ३५ : नई दिल्ली : २४-३० नवम्बर २०१७

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए सानंद झारखंड में प्रविष्ट हो चुके हैं। झारखंड प्रवास के दौरान पूज्यप्रवर का बीस तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि के रूप में अपनी पहचान रखने वाले सम्मेद शिखर में ३० नवम्बर से २ दिसम्बर तक तथा चास बोकारो में ६-८ दिसम्बर का प्रवास पूर्व निर्धारित है। घोषित कार्यक्रमानुसार आचार्यप्रवर १३ जनवरी २०१८ को उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर में पधार जाएंगे। पूज्यप्रवर के पंच दिवसीय प्रवास में वहां वर्धमान महोत्सव समायोज्य है। आचार्यप्रवर १५४वें मर्यादा महोत्सव के लिए २० जनवरी को कटक में मंगल प्रवेश करेंगे। वहां २२-२४ जनवरी को मर्यादा महोत्सव का त्रिदिवसीय भव्य आयोजन होगा।

तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि की ओर तीर्थंकर के प्रतिनिधि

भगवान वर्धमान के दीक्षा दिवस पर वर्धमान के प्रतिनिधि पुनः वर्धमान में

१३ नवम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः कान्दासोना से वर्धमान स्थित आलमगंज के लिए प्रस्थान किया। जुकाम और उसके कारण हुआ हल्का ज्वर भी पूज्यचरणों को नहीं रोक पाया। मुनिवृंद की साधन (हस्तचालित व्हीलचेयरनुमा वाहन, जो साधुवृंद द्वारा चलाया जाता है) के उपयोग की प्रार्थना भी पूज्यप्रवर ने स्वीकार नहीं की और पैदल ही गंतव्य तक की दूरी तय की। पूज्यप्रवर के पुनरागमन से वर्धमानवासी अतिशय आह्लादित थे। उनका आंतरिक उल्लास उनकी प्रसन्न मुखाकृति पर मुखर बना हुआ था। विहार के दौरान कुछ श्रद्धालुओं ने अपने-अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण किया। लगभग १३.३ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर वर्धमान के आलमगंज में स्थित 'शांति राइस मिल' में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। पूज्यप्रवर का एकदिवसीय प्रवास प्राप्त कर श्री आलोक दिलीप अग्रवाल परिवार अतिशय हर्षविभोर था।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आज मृगशिर कृष्णा दसमी है, भगवान महावीर का दीक्षा दिन है। आज के दिन लगभग तीस वर्ष की अवस्था में वर्धमान ने श्रामण्य को स्वीकार किया था। श्वेताम्बर मंतव्यानुसार उन्होंने गार्हस्थ्य जीवन में भी प्रवेश किया था अर्थात् उनका पाणिग्रहण भी हुआ और संतानोत्पत्ति भी हुई। यों तो अनेक व्यक्ति दीक्षित होते हैं, किन्तु भगवान महावीर जैसी उच्चकोटि की साधना करने वाला कोई-कोई होता है। उन्होंने जितनी कठोर साधना की, उतनी कठोर साधना करना हर किसी के वश की बात नहीं। चंडकौशिक सर्प ने उन्हें डसा और देवेन्द्र ने प्रणति की, वे उन दोनों स्थितियों में समत्वलीन रहे। उनमें मातृभक्ति का भी चिन्तन था।

दीक्षा के बाद लगभग साढ़े बारह वर्षों का उनका काल विशेष साधना में बीता। उन्होंने दुनिया को आलोक बांटा। ऐसी परम पवित्रात्माएं स्वयं वीतरागता को धारण कर दुनिया को आध्यात्मिक पथ दिखाती हैं। उनके सामने देव, मनुष्य और तिर्यंच संबंधी कितनी कठिनाईयां आईं, किन्तु उन्होंने उन्हें किस प्रकार सहन कर लिया। करीब बहत्तर वर्षों का उनका जीवनकाल रहा। कार्तिकी अमावस्या को उनका परिनिर्वाण हुआ। भगवान महावीर का दीक्षा दिवस हमें साधना की तरफ आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दे, यह काम्य है।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज मृगशिर कृष्णा दसमी है। आज से चार वर्ष पूर्व ४३ व्यक्ति एक साथ जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ में मुनि दीक्षा से दीक्षित हुए थे। मेरे द्वारा उन्हें संयम प्रदान किया गया। सायास या अनायास एक साथ तैंयालीस व्यक्तियों का दीक्षित हो जाना जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास का विशेष प्रसंग बन गया। आज के दिन कितने व्यक्ति भगवान महावीर के पथ पर चलने के लिए कृतसंकल्प बने थे।'

पूज्यप्रवर से प्रेरणा प्राप्त कर 'शांति राइस मिल' के ऑनर श्री आलोक अग्रवाल, श्री दिलीप अग्रवाल आदि परिजनों और मिल से जुड़े लोगों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए। पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का उद्‌बोधन हुआ।

श्री दिलीप अग्रवाल ने पूज्यप्रवर के स्वागत में आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। अग्रवाल परिवार की महिलाओं ने गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। वर्धमान तेरापंथ कन्या मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। सुश्री गीतिका बांठिया ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा अपने आराध्य के पादाम्बुज में प्रणति अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

शांति राइस मिल से संबंधित अग्रवाल परिवार आज एक श्रद्धालु की भांति चारित्रात्माओं की सेवा और आगंतुकों के आतिथ्य में लीन रहा। परिवार की भक्ति भावना की प्रबलता को देखकर यह अनुमानित ही नहीं हो रहा था कि यह परिवार तेरापंथी नहीं है। पूज्यप्रवर के प्रवास, निकट दर्शन तथा उपासना का सुअवसर प्राप्त कर परिवार के सदस्य बार-बार अपने सौभाग्य की सराहना कर रहे थे। आचार्यप्रवर के त्याग-तपोमय व्यक्तित्व से पूरा परिवार अत्यंत प्रभावित हुआ।

आज सायंकालीन गुरुवन्दना के आसपास पूज्यप्रवर ने मुनिवृंद को प्रेरणा देते हुए फरमाया कि हमें गोचरी करने से पहले यह ध्यान देना चाहिए कि कहीं वहां काई, हरियाली आदि तो नहीं हैं?' पूज्यप्रवर ने व्यवस्था प्रदान करते हुए कहा कि जहां डेरे लगे हों, वहां एक संत पहले जाकर देख लें। उनकी ओर से अनापत्ति होने के बाद ही संत वहां से गोचरी-पानी आदि ग्रहण करें। इस दृष्टि से मुनि गौतम में अच्छी जागरूकता लगी। इन्होंने पूर्व में भी मुझे एक बार बताया था कि डेरों के स्थान में काई है और आज भी बताया। ये इस संदर्भ में साधुवाद के पात्र हैं। आचार्यप्रवर ने उन्हें इक्कीस कल्याणक और तीन दिन 'धड़ा' से मुक्ति की बक्सीस प्रदान की।

बदला मौसम का मिजाज

१४ नवम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः वर्धमान के आलमगंज से कुलगरिया की ओर प्रस्थित हुए। अग्रवाल परिवार के अनेक सदस्य प्रातः करीब साढे तीन बजे ही पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हो गए। उन्होंने आचार्यप्रवर के दर्शन कर बृहत् मंगलपाठ का श्रवण किया। पूज्यप्रवर को पहुंचाने हेतु वे लोग कई किमी तक पैदल भी चले। मिल के कर्मचारी भी करीब एक किमी तक पैदल चलकर अहिंसा यात्रा में सहभागी बने। आज मौसम ने कुछ करवट ली। प्रातःकाल से आकाश में हल्के बादल मंडरा रहे थे। इस कारण वातावरण में हल्की शीतलता भी व्याप्त थी। मौसम का यह रूप मानों सर्दी की आहट थी। कोलकाता से वर्धमान तक का अधिकांश रास्ता पूज्यचरण से पूर्व में भी पावन बना हुआ था। आज से अहिंसा यात्रा नए पथ पर गतिमान हुई। मार्गवर्ती बड़दीघी के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन मार्गदर्शन प्राप्त किया। लगभग १३.३ किमी का विहार परिसंपन्न कर आचार्यप्रवर कुलगरिया में स्थित मदरसा हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दुनिया में ज्ञानी व्यक्ति भी मिलते हैं, किसी को किसी विषय का तो अन्य किसी को अन्य किसी विषय का ज्ञान हो सकता है। विभिन्न रूपों में ज्ञानी पुरुष मिल जाते हैं। ज्ञानी होने का सार है किसी की हिंसा नहीं करना। अहिंसा कल्याणकारी है। हिंसा एक ऐसा तत्त्व है, जो दुर्गति में ले जाने वाला है।

जैन वाङ्मय में 'आश्रव' शब्द आता है। आश्रव जन्म-मरण की परंपरा का हेतु होता है। पांच आश्रवों में पहला है--मिथ्यात्व। जो जैसा नहीं है, वैसा मान लेना मिथ्यात्व होता है। जिस व्यक्ति का दृष्टिकोण सही नहीं है, वह व्यक्ति आगे क्या बढ़ पाएगा? सम्यक् दृष्टिकोण के द्वारा मिथ्यात्व से दूर रहा जा सकता है। जीवन में व्रतों को ग्रहण किया जाए तो अविरति आश्रव समाप्त हो सकता है। अध्यात्म के प्रति भावों में जो अनुत्साह है, वह दूर हो जाए तो प्रमाद आश्रव समाप्त हो सकता है। राग-द्वेषात्मक उत्ताप कषाय आश्रव है। कषाय आश्रव भी चेतना को मलिन बनाता है। वह दसवें गुणस्थान के बाद समाप्त होता है। शरीर, मन और वाणी की प्रवृत्तियां योग आश्रव हैं। योग आश्रव भी संसार में भ्रमण कराने वाला होता है। वह तो चौदहवें गुणस्थान में समाप्त होता है। जब प्रवृत्तियां निर्जरा के रूप में होती हैं तो वे मुक्ति दिलाने वाली भी बन जाती हैं।

एक सामान्य गृहस्थ ज्यादा तत्त्वज्ञान न भी कर सके तो भी वह हिंसा, झूठ व चोरी से यथासंभव बचने का प्रयास करे, यह काम्य है। हिंसा अधोगति और अहिंसा आत्मा के ऊर्ध्वगमन का मार्ग है। हिंसा को गलत मानकर छोड़ देना आध्यात्मिक दिशा में आगे बढ़ना होता है। जो व्यवहार आदमी दूसरों से अपने लिए नहीं चाहता, उसे दूसरों के साथ भी वैसा नहीं करना चाहिए। जहां हिंसा है, वहां अशांति हो सकती है। और जहां अहिंसा है, वहां शांति है। दुनिया में शांति रहनी चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने बाल दिवस के संदर्भ में कहा--'आज १४ नवम्बर है, बाल दिवस है। यदि बच्चों में अच्छे संस्कार आ जाएं तो बालकों का भविष्य अच्छा बन सकेगा। बच्चे देश के भविष्य होते हैं। वे निर्भीक हों, विनीत हों और अहिंसक भी हों। जिनके विचार उदात्त हों, आचार उन्नत हो और संस्कार सुष्ठु हों, ऐसे बालक देश में होते हैं तो देश के लिए और उन बालकों की आत्मा के लिए अच्छी बात हो सकती है।

पंडित जवाहर लाल नेहरू से जुड़ा हुआ दिन बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। विद्यालय/मदरसे में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का ज्ञान भी बढ़ना चाहिए, उनमें सद्ज्ञान आना चाहिए। उनका लक्ष्य महान, विद्वान और भगवान बनने का हो। अच्छे विचारों और आचरणों से वे महान बन सकते हैं। अध्यापकगण विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों का ज्ञान देने के साथ-साथ उनमें अच्छे संस्कार भरने का भी प्रयास करें। विचार, संस्कार और आचार तीनों परस्पर जुड़े हुए हैं। संस्कार एक सेतु है। एक किनारा विचार है तो दूसरा किनारा आचार। एक किनारे से दूसरे किनारे पर जाने के लिए जो सेतु चाहिए, वह संस्कार है। बालकों में सत्संस्कार पुष्ट रहे, यह काम्य है।'

मदरसा हाइस्कूल की ओर से मोहम्मद आबु साहिब ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आज दिन-रात में मुस्लिम समुदाय के अनेकानेक व्यक्ति पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए और अपने मजहब की परंपरानुसार आदाब कर पूज्यप्रवर का अभिवादन किया।

वर्षा ने करवाया विलम्ब, बदला पड़ाव स्थल, धुन के धुनी गुरुवर ने रात्रि में किया प्रवचन

१५ नवम्बर। मध्य रात्रि के बाद प्रारम्भ हुई रिमझिम वर्षा का दौर प्रातः सूर्योदय के बाद भी जारी था, इस कारण आज का विहार निर्धारित समय पर नहीं हो पाया। पूज्यप्रवर ने विद्यालय के बरामदे में

पधारकर सामने की ओर कुछ दूरी पर स्थित विद्यालय में अवस्थित महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों को दर्शन दिए। प्रथम प्रहर की समाप्ति के बाद काफी देर तक भी वर्षा नहीं रुकी तो परम पूज्य आचार्यप्रवर ने आज का प्रातराश वहीं (कुलगरिया गांव में स्थित मदरसा हाइस्कूल) में ही करने का निर्णय लिया। तदनुसार क्रियान्विति भी हुई। इसी प्रकार मध्याह्नकालीन आहार के समय भी वर्षा नहीं रुकी तो पूज्यप्रवर ने आहार भी वहीं किया। करीब १.४७ बजे वर्षा रुकने की सूचना मिली तो पूज्यप्रवर ने तुरन्त कुलगरिया से प्रस्थान कर दिया। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार पूज्यप्रवर का आज का प्रवास करीब १५.५ किमी दूर स्थित पुरुसा गांव में होना था, किन्तु वर्षा के कारण विहार में हुए अत्यधिक विलंब को देखते हुए आज का पड़ाव लगभग ७.२ किमी दूर स्थित गलसी गांव में ही निर्धारित किया गया।

विहार के दौरान रिमझिम वर्षा पुनः शुरू हो गई और थोड़ी देर बाद थम भी गई। यों पूरे विहार में वर्षा के होने और थमने का क्रम जारी रहा। वर्षा के कारण गलसी गांव के दर्शनार्थी पूज्यप्रवर के आशीर्वाद से वंचित रहे। करीब ७.२ किमी का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर गलसी हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

वर्षा के कारण हुए विलम्ब के कारण आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम दिन में आयोजित नहीं हो पाया। धुन के धनी आचार्यप्रवर प्रवचन के बिना दिन को जाया कैसे कर सकते थे। अतः आचार्यप्रवर ने आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम रात्रि में समायोजित करने का निर्णय लिया और तदनुसार प्रवचन भी किया। पूज्यप्रवर के प्रवचन के दौरान अधिकांश संत भी उपस्थित रहे।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'देहे दुक्खं महाफलं' यह एक सुन्दर सूक्त है। इसके माध्यम से शास्त्रकार ने एक सुन्दर बोध देने का प्रयास किया है कि शरीर में जो कष्ट होता है, वह महान फल देने वाला हो सकता है। भूख अपने आप में दुःख है। कहा गया है कि क्षुधा के समान कोई वेदना नहीं है। भूख लगे और खाने को न मिले तो कष्टदायक स्थिति हो सकती है। साधु स्वयं के लिए भोजन बना नहीं सकता, दूसरों द्वारा अपने लिए बनाया हुआ भोजन भी नहीं ले सकता, यह साधु का नियम है। ऐसी स्थिति में उसे क्षुधा को सहन करना पड़ सकता है। प्यास भी एक कष्ट हो सकता है। प्यास में पानी न मिले तो कितना कष्ट होता है। सोने का स्थान अच्छा न मिले तो भी कष्ट हो सकता है। सर्दी भी शरीर को दुःखित कर सकती है और भीषण गर्मी से भी शरीर में दुःख पैदा हो सकता है। संयम में अरति भी कष्टदायक होती है। भय भी दुःखदायक होता है। ऐसे कष्ट शरीर या मन में उत्पन्न हो सकते हैं। कष्टों को विचलित हुए बिना समत्व भाव से सहन करना महान फल देने वाला होता है।

आदमी को भय का भी सामना करना चाहिए, उससे आक्रान्त नहीं बनना चाहिए। भय लगने लगे तो 'ऊँ भिक्षु' जैसे किसी पवित्र मंत्र का जप कर लेना चाहिए, पर भय से आक्रांत नहीं बनना चाहिए। भय का कुछ सामना करने का प्रयास करना चाहिए। जैसे--किसी साधु को रात में बाहर जाने से डर लगता है तो उसे अपेक्षावश रात में बाहर जाने से कतराना नहीं चाहिए, अपितु कुछ कदम बाहर जाकर भय का सामना करना चाहिए। जहां डर लगे, वहां जाना चाहिए। साधु को अभय का अभ्यास करना चाहिए। जैसे--रात्रि में जब सब लोग सो जाएं तो कुछ समय के लिए उठकर बैठना चाहिए। उस समय डर लगे तो उसे सहन करना चाहिए। यथाविधि मकान के बाहर जाकर अकेले बैठना चाहिए। फिर कभी श्मशान में रात में रहना चाहिए। वहां जप-ध्यान की साधना करनी चाहिए। इस प्रकार डर का सामना करना चाहिए। यह अभय के विकास की प्रणाली है। रात को अंधेरे में कुछ लगे कि कोई है तो नमस्कार महामंत्र या ऊँ भिक्षु का जप कर लेना चाहिए। हमारी सबसे मित्रता है, हमें कोई क्यों परेशान करे? फिर भी कोई

परेशान कर दे तो उसे निर्जरा मानकर सहन करना चाहिए। कष्टों की स्थिति में भी आदमी को बेचैन नहीं होना चाहिए। उन कष्टों को शांति से सहन करना चाहिए। कष्टों को शांति से सहन करने से कर्मों की निर्जरा के रूप में महाफल प्राप्त होता है और साथ में प्रासंगिक रूप में पुण्यबंध का फल भी मिल सकता है।'

वर्षा के बीच बढ़ती रही अहिंसा यात्रा

१६ नवम्बर। सूर्योदय से पूर्व हल्की वर्षा हो रही थी, किन्तु वह सूर्योदय के आसपास थम गई। इस कारण पूज्यप्रवर के प्रस्थान में व्यवधान नहीं हुआ। पूज्यप्रवर ने सूर्योदय के कुछ समय पश्चात् गलसी से बुदबुद के लिए प्रस्थान किया। इस विहार में गत कल की अवशिष्ट दूरी को भी पाट दिया गया, इसलिए विहार लंबा हो गया। विहार के दौरान आसमान में बादल छाए हुए थे। कृषक वर्ग धान (चावल) की कटाई में लीन था अथवा उसकी तैयारी कर रहा था। मार्गवर्ती पुरसा गांव के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्यप्रवर गंतव्य स्थल से करीब दो किमी दूर थे कि वर्षा प्रारम्भ हो गई। वर्षा ने क्रमशः कुछ तीव्रता धारण कर ली। पूज्यप्रवर ने मार्ग के बांयी ओर स्थित छोटे से शनि मंदिर के बरामदे में रुककर कुछ क्षण प्रतीक्षा की, किन्तु वर्षा के शीघ्र रुकने का आसार नहीं लगा तो आचार्यप्रवर पुनः गंतव्य स्थल की ओर प्रस्थित हो गए। कुल १५.५ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर बुदबुद स्थित श्री राम भवन में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'तपस्या का फल है व्यवदान। जैन दर्शन के अनुसार व्यवदान को निर्जरा भी कहा जा सकता है। संसारी अवस्था में आत्मा कर्मों से ढ़की हुई रहती है, मलिन रहती है। तपस्या के द्वारा कर्मरजों को दूर किया जाता है। कर्मरजों के दूर होने से आत्मा की जो निर्मलता निष्पन्न होती है, वह निर्जरा होती है। जैसे सूर्य के आगे बादल आ जाने पर वह अदृश्य हो जाता है, ज्योंही बादल हटते हैं, वह दृश्यमान हो जाता है। इसी प्रकार आत्मा संसारी अवस्था में कर्मरूपी बादलों से आच्छन्न रहती है। ज्यों-ज्यों वे हटते हैं, त्यों-त्यों आत्मा की ज्योति प्रकट होती जाती है।

अध्यात्म के क्षेत्र में संवर का महत्त्व है, उसके साथ निर्जरा का भी महत्त्व है। निर्जरा अपने आप में एकाकार है, किन्तु उसके बारह भेद बताए गए हैं। एकाकार होने पर भी निर्जरा के साधनों के आधार पर उसके बारह भेद होते हैं। जिससे निर्जरा होती है, वह तपस्या बारह प्रकार की है। तपस्या कारण है, निर्जरा कार्य है। कारणभेद के आधार पर कार्य में भी भेद का दर्शन कर लिया जाता है।

यह जीवन क्रमशः बीत रहा है। मनुष्य को यह ध्यान देना चाहिए कि आज के दिन में कोई निर्जरा का कार्य किया या नहीं? यदि आज कोई पाप कार्य नहीं किया और निर्जरा का कार्य किया तो मानना चाहिए कि आज का दिन सुफल हो गया। निर्जरा साधु और श्रावक के ही नहीं, घोर मिथ्यात्वी अभवी जीव के भी होती है, किन्तु दोनों के स्तर में काफी अंतर है। सम्यक्त्व और संवर के साथ होने वाली निर्जरा बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण होती है। खाद्य संयम, स्वाध्याय, वीतराग आत्मा के जप आदि के द्वारा गृहस्थ भी निर्जरा कर सकता है। सामायिक में जप, ध्यान, स्वाध्याय आदि किया जाए तो संवरयुक्त निर्जरा हो सकती है। किसी को चित्त समाधि पहुंचाना और अध्यात्म के पथ पर आगे बढ़ाने का प्रयास भी निर्जरा के साधन हैं।'

श्री राम भवन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सागरमल चौधरी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

अहिंसा, संयम और तप रूपी धर्म रहे जीवन में

१७ नवम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः बुदबुद से पानागढ़ बाजार की ओर प्रस्थान किया। विहार के दौरान बुदबुद के एक चौधरी परिवार ने आचार्यप्रवर को भावभीना वंदन किया। अन्य अनेक लोगों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीष प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पानागढ़ में एक तेरापंथी परिवार को भी अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगलपाठ श्रवण का सुअवसर प्राप्त हुआ। प्रायः पूरे विहार के दौरान आसमान में बादल छाए रहे। यदा-कदा हल्की बूंदाबांदी भी हुई। लगभग ११ किमी का विहार संपन्न कर आचार्यप्रवर पानागढ़ बाजार स्थित हिन्दी हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'धर्म उत्कृष्ट मंगल है। दुनिया में उससे बड़ा कोई मंगल नहीं होता। अर्हतों, सिद्धों और आचार्यों को मंगल बताया गया है, क्योंकि उनमें वीतराग द्वारा निर्दिष्ट धर्म है। मंगल का प्राण है धर्म। जिसमें भी धर्म है, उसमें मंगल है। जहां पाप विनष्ट होता है, विघ्न विनाशन होता है, बाधा स्वयं बाधित होती है, वहां मंगल है।

दुनिया में पदार्थों को भी मंगल माना गया है, किन्तु वे धर्म जितने मंगल नहीं हैं। दुर्गति की ओर जाने वाले जीवों को जो उठा लेता है, धारण कर लेता और शुभ स्थान में स्थापित कर देता है, वह धर्म है। वस्तु के स्वभाव और कर्त्तव्य को धर्म कहा जाता है, किन्तु आज मैं जिस धर्म की चर्चा कर रहा हूं, वह आत्मशुद्धि का साधन है। इस धर्म के तीन आयास हैं--अहिंसा, संयम और तप।

जहां अहिंसा है, वहां धर्म है। साधु तो मानों अहिंसामूर्ति होते हैं। वे छहकाय के अभयदाता होते हैं। अहिंसा का दर्शन करना हो तो साधु में किया जा सकता है। साधु को हर क्रिया में जागरूकता रखनी चाहिए। अजागरूकता अहिंसा की साधना में बाधक बन सकती है।

संयम धर्म है। साधु को अपने संयम को और अधिक पुष्ट करने का यथोचित प्रयत्न करते रहना चाहिए। साधु के जीवन में वाणी, इन्द्रियों, उपकरणों आदि का संयम विशेष रूप से रहना चाहिए।

तप भी धर्म है। जीवन में उसके विकास का भी प्रयत्न करना चाहिए। स्वाध्याय भी तप है। सामान्यतया प्रायः प्रतिदिन यथासंभव आगम स्वाध्याय हो जाए, साधु के लिए यह ध्यातव्य है। रत्नाधिक साधु-साध्वियों का विनय रखना चाहिए। विनय से भी निर्जरा होती है। अहिंसा, संयम और तप रूपी धर्म की जितनी आराधना होगी, आत्मा उतनी ही कल्याण की दिशा में आगे बढ़ सकेगी।

गृहस्थ भी अपने जीवन में जितना हो सके, धर्म का आराधन करने का प्रयास करे। धर्म तो चेतना है। वह आत्मा का स्वभाव है। इसलिए आदमी को अपने जीवन में परम मंगल धर्म की आराधना करने का प्रयास करना चाहिए। उससे कल्याण की स्थिति प्राप्त हो सकेगी।'

पूज्यप्रवर ने चतुर्दशी के संदर्भ में 'हाजरी' का वाचन कर साधु-साध्वियों को पावन संबोध प्रदान किया। हाजरी वाचन के उपरान्त साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र उच्चरित किया।

भगवती अहिंसा है कल्याणकारी

१८ नवम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः पानागढ़ से दुर्गापुर के विधाननगर की ओर प्रस्थित हुए। गीला मार्ग और यत्र-तत्र बनी हुई कीचड़ की स्थिति गत रात्रि में हुई वर्षा की साक्ष्य थी। आकाश आज भी हल्के बादलों से आच्छादित था। विहार के दौरान यदा-कदा हल्की बूंदाबांदी भी हुई।

मार्ग में पानागढ़ के.बी. विद्यालय के विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष प्राप्त की। पानागढ़ के अनेकानेक ग्रामीण भी आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। दुर्गापुर के आसपास इण्डियन ऑयल, हिन्दुस्तान पेट्रोलियम और भारत पेट्रोलियम तीनों के डिपो हैं। मार्गवर्ती उन डिपो के आसपास उनसे संबद्ध कर्मचारियों के अनेकों समूहों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

दुर्गापुर और आसपास के क्षेत्रों के जैन समाज द्वारा मार्ग के निकट निर्मीयमाण भवन में पधारने हेतु पूज्यप्रवर उस ओर मुड़े, किन्तु मार्गस्थ हरियाली उस भवन के पूज्यचरणों से पावन बनने में बाधक बन गई। पूज्यप्रवर ने दूर से ही भवन से संबंधित लोगों को मंगलपाठ सुनाया। आचार्यप्रवर का मार्ग से कुछ भीतर स्थित मिशन हॉस्पिटल में पधारना हुआ। हॉस्पिटल के चेयरमेन डॉ. सत्यजीत बोस ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। कुल करीब १५ किमी का विहार संपन्न कर आचार्यप्रवर दुर्गापुर के विधाननगर में स्थित अमृता विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'सम्यक् प्रवृत्ति वाला और सम्यक् आचार वाला व्यक्ति समित कहलाता है। जो आदमी प्राणों का अतिपात न करे, किसी को मारे नहीं, हिंसा न करे, जो त्राता हो, उस व्यक्ति को समित कहा जाता है। जो अहिंसक होता है, वह समित होता है।

हमारी दुनिया में हिंसा मानों शरीर के साथ जुड़ी हुई है। जिससे किसी जीव की हिंसा हो ही नहीं, ऐसा तो कोई विरल ही व्यक्ति मिले तो मिल सकता है। अन्यथा शरीरधारी हो और व्यवहार में जीने वाला हो, उससे हिंसा न हो, यह बहुत कठिन है। और तो क्या साधु के द्वारा भी शारीरिक निवृत्ति आदि के संदर्भ में हिंसा हो सकती है। गृहस्थ से तो हिंसा होनी बहुत संभव है। ऐसी स्थिति में यथासंभव हिंसा के अल्पीकरण का प्रयास करना चाहिए। गृहस्थ के लिए यह ध्यातव्य होता है कि अनाज में कहीं 'इल्ली' आदि जीव तो पैदा नहीं हुए हैं? यदि हो गए हों तो उनकी हिंसा से बचने का प्रयत्न करना चाहिए। स्नान में पानी के अल्पीकरण का प्रयास हो तो हिंसा से कुछ बचाव हो सकता है। इसी प्रकार हरियाली रहित निरवद्य स्थान हो तो हरियाली पर क्यों चलना चाहिए? इस प्रकार जीवन की हर क्रिया में ध्यान देकर हिंसा का अल्पीकरण किया जा सकता है।

हिंसा के दो प्रकार हैं--आरम्भज और संकल्पज। रसोई, खेती-बाड़ी आदि के संदर्भ में होने वाली हिंसा आरंभज होती है, यह गृहस्थ के लिए आवश्यक कोटि की हिंसा होती है। गुस्से और लोभ के वशीभूत होकर किसी को मार देना संकल्पज हिंसा होती है। गृहस्थ को आरम्भज हिंसा से तो जितना बचाव हो सके, करने का प्रयास करना चाहिए, किन्तु संकल्पज प्राणातिपात से तो विशेष रूप से बचाव का प्रयास करना चाहिए। देश की रक्षा के लिए युद्ध में किसी की हिंसा करनी पड़ी, वह अलग बात है, किन्तु क्रोध और लोभ में आकर व्यक्तिगत रूप में किसी को क्यों मारना चाहिए?

अहिंसा सब जीवों के लिए कल्याणकारी होती है। वह परम धर्म है जिसके जीवन में अहिंसा आ गई, वह व्यक्ति समित कहलाने का अधिकारी होता है।

हिंसा के दो प्रकार हैं--द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा। शरीर से गैर इरादतन किसी रूप में जीव की हिंसा हो गई, वह द्रव्य हिंसा है और मन में हिंसा का परिणाम आ गया, वह भाव हिंसा है। भाव हिंसा आत्मा को मलिन बनाने वाली होती है। जैसे-एक वीतराग साधु, जागरूक साधु चल रहा है, उसके पांव के नीचे कोई जीव आकर मर जाए तो वह द्रव्य हिंसा है, भाव हिंसा नहीं। क्योंकि उसके भावों में हिंसा नहीं

है। एक आदमी ने हिरण को मारने के लिए बाण फेंका और निशाना चूकने के कारण वह बाण हिरण को नहीं लगा, वहां द्रव्य हिंसा न होते हुए भी भाव हिंसा है। क्योंकि उस व्यक्ति का इरादा हिरण को मारने का था। हिरण बच गया, वह उसका भाग्य हो सकता है।

हिंसा दुःख देने वाली होती है। दुःख हिंसा से पैदा होते हैं। गृहस्थ को अपने जीवन में हिंसा के अल्पीकरण का यथासंभव प्रयत्न करना चाहिए। आदमी की जीवनशैली अहिंसा प्रधान होनी चाहिए। हिंसा प्रधान जीवनशैली तो मानों अपने आपमें नरक है। अहिंसा भगवती है, जीवनदायिनी है, मां है। जीवन में अहिंसा के विकास से आदमी का कल्याण हो सकता है।'

अपने गुरु को अपने बीच पाकर हर्षाए दुर्गापुरवासी

१६ नवम्बर। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः दुर्गापुर के विधाननगर से प्रस्थान किया। गत कुछ दिनों से मेघाच्छादित रहने वाला आसमान आज निरभ्र बना हुआ था। रविवार होने के कारण कोलकाता और आसपास के प्रवासी अच्छी संख्या में उपस्थित थे। स्थान-स्थान पर दुर्गापुर के नागरिक पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हो रहे थे। इस क्रम में मुचीपाड़ा और गणतंत्र कॉलोनी के निवासियों को भी यह सौभाग्य प्राप्त हुआ। डीबीसी भवानी पल्ली (बस्ती) के बच्चों को पूज्यप्रवर ने शराब न पीने की प्रतिज्ञा स्वीकार करवाई। बस्ती की महिलाओं को भी पूज्यप्रवर की पावन प्रेरणा प्राप्त हुई। लगभग ८.० किमी का विहार कर आचार्यप्रवर दुर्गापुर में स्थित सीमेंट कॉलोनी के स्टाफ क्लब में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

पूज्यप्रवर का पदार्पण दुर्गापुर के करीब बीस तेरापंथी परिवारों को अतिशय आह्लादित बनाए हुए था। श्रद्धालुओं की प्रसन्न मुखाकृति पर उनका आन्तरिक उल्लास मुखर बना हुआ था।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'एक व्रत होता है--अचौर्य--चोरी नहीं करना। आत्म कल्याण के लिए अचौर्य व्रत को धारण करना आवश्यक होता है। साधु के तो महाव्रत के रूप में सर्व अदत्तादान विरमण व्रत होता है। गृहस्थ के भी अचौर्य व्रत होना चाहिए। पराया धन तो धूल के समान होता है। आदमी लोभवश चोरी कर सकता है अथवा अभावग्रस्त व्यक्ति विवशतावश चोरी कर सकता है। दृढ़ संकल्प हो तो आदमी अभाव में भी गलत कार्य करने से बच सकता है।

ईमानदारी जीवन का आभूषण होता है। दूसरे व्यक्ति की बहुमूल्य वस्तु भी चोरी की भावना से नहीं लेनी चाहिए। आदमी को चोरी का परिहार करना चाहिए, ताकि इस जन्म में भी शांति रहे और आगे भी अच्छा रह सके।' पूज्यप्रवर ने दुर्गापुरवासियों को अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान करते हुए संकल्पत्रयी ग्रहण करवाई।

दुर्गापुर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री अशोक बोरड़ तथा पूर्व अध्यक्ष श्री विजयसिंह श्यामसुखा ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। दुर्गापुर तेरापंथ महिला मंडल ने पूज्यप्रवर के स्वागत में गीत का संगान किया।

साधनाशील और ज्ञानी की पर्युपासना करो

२० नवम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः दुर्गापुर सीमेन्ट कॉलोनी से काजोरा की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में एक तेरापंथी परिवार के व्यावसायिक प्रतिष्ठान के आसपास पूज्यप्रवर आसीन हुए और संबंधित परिवार को कुछ क्षण उपासना का अवसर प्रदान किया। आचार्यप्रवर लगभग १४.० किमी का विहार

कर काजोरा में राजमार्ग से कुछ भीतर स्थित आर्ट ऑफ लिविंग आश्रम में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। आर्ट ऑफ लिविंग के दक्षिण बंगाल के प्रमुख स्वामी श्रद्धानंदजी ने राजमार्ग पर पूज्यप्रवर की अगवानी की। वे पूज्यप्रवर के पदार्पण के संदर्भ में विशेष रूप से यहां पहुंचे थे।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आदमी को अपने हित के बारे में ध्यान देना चाहिए। हित दो प्रकार का होता है--इस जीवन का हित और परलोक का हित। दोनों हित आदमी को चाहिए। इस लोक, परलोक और सुगति प्राप्ति के लिए बहुश्रुत की पर्युपासना करनी चाहिए। आदमी को वहीं से प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए, जहां से कुछ मिलने की संभावना हो। बहुश्रुत एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति होता है। ज्ञानी और अनुभवी बहुश्रुत की पर्युपासना करनी चाहिए। उनके समक्ष जिज्ञासा करनी चाहिए। जिज्ञासा का समाधान प्राप्त हो जाए तो आदमी को निधान प्राप्त हो सकता है।

साधना और ज्ञान का योग होना बहुत महत्त्वपूर्ण बात होती है। ज्ञानी और त्यागी व्यक्ति से मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है। गुरु मार्गदर्शक होते हैं। वे अज्ञान को दूर करने वाले होते हैं। गुरु सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र और सम्यक् तप में पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देते हैं।'

श्री श्री रविशंकरजी से संबंधित स्थान में आज आना हुआ है और स्वामी श्रद्धानंदजी से मिलना हुआ है। जनता को अध्यात्म का मार्ग मिले। परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी सन् २००५ में दिल्ली के अध्यात्म साधना केन्द्र में विराजमान थे तो वहां रात्रि के समय में श्री श्री रविशंकरजी पधारे थे। मैं भी वहीं था। फिर जैन विश्व भारती के द्वारा उनके सम्मान-पुरस्कार का कार्यक्रम भी हुआ था। आज इस आश्रम में आना हुआ है। आश्रम अपने आपमें बहुत बढ़िया लगता है। जहां साधना की बात हो, वहां साधना के लोग आएं, बहुत अच्छी बात होती है। आश्रम--जहां तपस्या की बात हो, जहां आने से थकान दूर हो जाए, श्रम दूर हो जाए, वह आश्रम हो सकता है। यहां आश्रम में अच्छी धार्मिक-आध्यात्मिक गतिविधियां चलती रहें। संसार में सुख रहे, शांति रहे, शांति बढ़े। हम भी जितना हो सके आदमी को अच्छा आदमी बनाने का तथा उसे कुछ अंशों में भी परम शांति मिलती रहे, ऐसा प्रयास करते रहें।'

आर्ट ऑफ लिविंग दक्षिण बंगाल के प्रमुख स्वामी श्रद्धानंदजी ने कहा--'हमारा यह सौभाग्य है कि आज अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री का यहां पदार्पण हुआ है। दक्षिण बंगाल आर्ट ऑफ लिविंग की ओर से मैं आचार्यश्री का हार्दिक स्वागत करता हूं। यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि आचार्यश्री ४० हजार से ज्यादा किमी पैदल चल चुके हैं। आप विश्व को सुन्दर बनाने में लगे हैं। आपकी उपस्थिति से ही वातावरण खिल उठता है।'

अनुग्रह में अभिस्नात हुए रानीगंजवासी

२१ नवम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः काजोरा से रानीगंज की ओर प्रस्थान किया। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम में पूज्यप्रवर का रानीगंज प्रवास निर्धारित नहीं था, किन्तु रानीगंजवासियों पर अनुग्रह करते हुए आचार्यप्रवर ने करीब ढाई किमी का चक्कर लेकर न केवल रानीगंज में पधारना स्वीकार किया, अपितु एक अहोरात्र का प्रवास भी वहां के लिए निर्णीत किया।

विहार के प्रारंभ में कुछ वेग के साथ बहने वाली ठंडी हवा हल्की शीतलहर का अहसास लिए हुए थी, किन्तु सूर्य ज्यों-ज्यों आकाश के मध्य भाग की ओर बढ़ रहा था, त्यों-त्यों हवा की शीतलता न्यून बनती जा रही थी। पीठ की ओर स्थित सूर्य अहिंसा यात्रा के पश्चिम दिशा में आगे बढ़ने का साक्ष्य था। पूज्यप्रवर राष्ट्रीय राजमार्ग से रानीगंज की ओर जाने वाले पथ पर गतिमान हुए। मुस्लिम बहुल क्षेत्र से गतिमान

पूज्यप्रवर को अनेकानेक लोग आदाब अर्ज कर रहे थे। पूज्यप्रवर आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठाकर उनके अभिवादन को स्वीकार कर रहे थे।

मार्गस्थ सैयद शमशुद्दीन वाली की मजार के विषय में बताया गया कि यह मुस्लिम समुदाय में विशेष मान्यता प्राप्त है। आचार्यप्रवर ने सड़क की ओर खुलने वाली खिड़की से मजार को निहारा। मार्ग में कुछ चक्कर लेकर पूज्यप्रवर रानीगंज प्रवासी कोठारी परिवार के दो अक्षम श्रद्धालुओं को दर्शन देने उनके घर के निकट पधारे। मार्गस्थ काई के कारण पूज्यप्रवर घर के भीतर तो नहीं पधार पाए, किन्तु घर के बाहर खड़े होकर दोनों वयोवृद्धों को कुछ क्षण उपासना का अवसर प्रदान किया। कई वर्षों बाद अपने आराध्य के दर्शन कर और अपने नगर में अपने घर के निकट पधारे देखकर मुनि गौरवकुमारजी (लाडनूं) की संसारपक्षीय पड़दादी और उनके परिजन कृतार्थता की अनुभूति कर रहे थे।

कुल लगभग १०.२ किमी का विहार परिसंपन्न कर आचार्यप्रवर रानीगंज स्थित श्री अमृत आश्रम में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। आचार्यप्रवर का पदार्पण और एक दिवसीय प्रवास रानीगंज के पांचों श्रद्धालु परिवारों को अतिशय हर्षविभोर बनाए हुए था। अति स्वल्प समय में पूज्यप्रवर का पदार्पण और प्रवास सुनिश्चित होना और पदार्पण हो जाना उनके लिए किसी आश्चर्य से कम नहीं था। स्थानीय दिगम्बर समाज में भी पूज्यप्रवर के पदार्पण से उल्लास का वातावरण था। अपने संप्रदाय के आश्रम में आचार्यप्रवर के प्रवास से रानीगंज के नाथ संप्रदाय से जुड़े हुए लोग भी प्रफुल्लित थे।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आदमी के जीवन में एक महत्त्वपूर्ण बात यह होनी चाहिए कि उसका दृष्टिकोण सम्यक् रहे। वह यथार्थ का बोध करे। यथार्थ दृष्टि सम्यक् दर्शन और यथार्थ बोध सम्यक् ज्ञान होता है। जैन दर्शन के अनुसार नव तत्त्वों के द्वारा यथार्थ को जाना जा सकता है। आत्मा और शरीर अलग-अलग है। आत्मा जीव और शरीर अजीव है। पुण्य-पाप के कारण आत्मा शरीर का साहचर्य हो जाता है। आश्रव के कारण पुण्य-पाप आत्मा से संपृक्त बनते हैं। संवर और निर्जरा के द्वारा आत्मा हमेशा के लिए शरीर से मुक्त हो सकती है। सभी कर्मों से आत्मा की मुक्त अवस्था का नाम ही मोक्ष है।

आत्मा शाश्वत है, मैं शरीर नहीं, आत्मा हूं। पुण्य-पाप रूपी कर्म आत्मा से संयुक्त है। उन कर्मों से छुटकारा पाने हेतु संवर-निर्जरा की साधना अपेक्षित है। इन बातों पर श्रद्धा करे, इनको इसी रूप में बताए, उस व्यक्ति में सम्यक् दर्शन है, ऐसी संभावना की जा सकती है।

आदमी का दृष्टिकोण सही होना चाहिए। सही बात को स्वीकार करने में दुराग्रह आड़े नहीं आना चाहिए। सही बात कहीं मिले, उसे ग्रहण करना चाहिए। पूर्व धारणा स्पष्ट रूप में गलत साबित हो जाए तो उस मिथ्या धारणा को छोड़ देना चाहिए। आदमी को यथार्थ मिल जाए तो अयथार्थ को छोड़ने की भावना रखनी चाहिए। जिसे सम्यक्त्व की प्राप्ति हो जाती है, वह एक निर्धारित अवधि में मोक्ष जरूर जाता है। आदमी जीवन में सम्यक् दर्शन को पाने और उसे सुरक्षित रखने और परिपुष्ट करने का प्रयत्न करे, यह काम्य है।'

पूज्यप्रवर के रानीगंज पदार्पण के संदर्भ में मुनि गौरवकुमारजी ने अपने संसारपक्षीय ज्ञातिजनों की कर्मभूमि पर अपनी भावाभिव्यक्ति दी। श्री अमृत आश्रम के सचिव श्री मुरारीलालजी बुचासिया ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। रानीगंज के कोठारी परिवार की ओर से महिलाओं ने गीत का संगान किया। श्री नवरत्नमल बैद ने अपने आराध्य के स्वागत में आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। अमृताश्रम से जुड़ी हुई महिलाओं ने गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। आज दिन-रात्रि में रानीगंज के जैन एवं जैनेतर समाज के अनेकानेक व्यक्तियों ने पूज्यप्रवर के दर्शनों का लाभ प्राप्त किया।

आराध्य के आगमन से अतिशय आह्लादित आसनसोलवासी

२२ नवम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः रानीगंज से आसनसोल की ओर प्रस्थित हुए। रानीगंज के तेरापंथी समाज ही नहीं, दिगम्बर जैन समाज के भी अनेकानेक व्यक्ति पूज्यप्रवर को पहुंचाने काफी दूर तक साथ चले। मार्गवर्ती बोगराचट्टी और सतग्राम के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीष प्राप्त की। पूज्यप्रवर लगभग १५.५ किमी का विहार कर आसनसोल पधारे। श्री आनंदपुर सत्संग आश्रम में पूज्यप्रवर का प्रवास हुआ। आश्रम के अध्यक्ष श्री संतोष बागड़िया आदि लोगों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यप्रवर के आसनसोल में आगमन और प्रवास से स्थानीय तेरापंथ परिवारों में उल्लास का माहौल था। जहां साधु-साध्वियों का पदार्पण भी कम होता है, वहां अपने गुरु का पदार्पण उनके लिए किसी वरदान से कम नहीं था।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के जीवन में मैत्री का बहुत महत्त्व होता है। मैत्री एक ऐसा तत्त्व है, जो सुख शांति देने वाला होता है। उससे आत्मा का कल्याण भी होता है। मैत्री में अहिंसा निहित है। अहिंसा के बिना मैत्री नहीं हो सकती। आदमी की सबके साथ मैत्री रहे। दूसरों के हित का चिन्तन करना मैत्री है। जो हमारा बुरा करे, उसके भी कल्याण, मंगल, हित की भावना रखनी चाहिए। ईंट का जवाब पत्थर से भी दिया जा सकता है और ईंट का जवाब कोमल फूलों से भी दिया जा सकता है। आदमी को अपना बुरा करने वाले के प्रति भी मंगल भावना रखनी चाहिए। मैत्री भाव शत्रु को भी बदल सकता है। एक आदमी के मन में अहिंसा प्रतिष्ठित हो जाती है तो सामने वाला भी वैर भाव को छोड़ सकता है। कोई किसी भी जाति, देश और संप्रदाय का हो, मैत्रीभाव सबके साथ रखना चाहिए। दुनिया के सभी प्राणियों के साथ मैत्री की भावना रखनी चाहिए। मैत्री भावना से इस जन्म में शांति और आगे भी सद्गति मिलने की संभावना रहती है।'

श्री आनंदपुर सत्संग आश्रम के अध्यक्ष श्री संतोष बागड़िया ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी संपूर्ण भारत की यात्रा पर निकले हैं। इस क्रम में आज हमारे इस श्री आनंदपुर सत्संग आश्रम में आपका पदार्पण हुआ है, यह हमारे लिए अत्यन्त सौभाग्य की बात है। मैं आचार्यश्री और उनके साथ पधारे हुए सभी साधु-साध्वियों का हार्दिक स्वागत करता हूं।'

आसनसोल के चोरड़िया परिवार की महिलाओं ने गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपने भावनसुमन अर्पित किए। श्री आनंदपुर सत्संग आश्रम से जुड़े हुए अनेकानेक जैनेतर व्यक्ति आज दिन-रात्रि में पूज्यप्रवर के दर्शन से लाभान्वित हुए।

शेष-अशेष

कोलकाता चतुर्मास के अंतिम दिनों में राजनैतिक, प्रशासनिक, अद्यौगिक आदि विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े अनेक विशिष्ट व्यक्तियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीष प्राप्त की। काफी लोगों के नाम उन दिनों की रिपोर्ट में प्रकाशित हो चुके हैं, कुछ अवशिष्ट नाम इस प्रकार हैं--

२७.१०.२०१७	श्री एस.के. डेस,	डीजी, इन्विस्टिगेशन
२८.१०.२०१७	श्री संजय सिंह,	एडीजी, साउथ बंगाल
३०.१०.२०१७	श्री अशोक तोदी,	चेयरमेन, लक्स इंडस्ट्रीज
३१.१०.२०१७	श्री महेश पंजाबी,	सलाहकार, विश्व बंगला, पश्चिम बंगाल सरकार
०२.११.२०१७	श्री लक्ष्मीकांत तिवारी,	तिवारी ब्रदर्स (मिठाईवाला)

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/15-17 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2015-2017
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

०३.११.२०१७	श्री आर.पी. सिंह,	एडीजी, बी.एस.एफ.
	श्री आर.एस. गोयनका,	को-चेयरमेन, इमामी ग्रुप
	श्री शोभन चट्टोपाध्याय,	मेयर, कोलकाता म्युनिसिपल कॉरपोरेशन, मिनिस्टर इंचार्ज फायर
	श्री गंगेश्वर सिंह,	एडीजी, इन्टलीजेंस ब्यूरो
०४.११.२०१७	श्री सी.एम. बच्छावत,	चेयरमेन, सेल्स टैक्स एफिलेट ट्रिव्यनल
	श्री देवाशीष सेन,	चेयरमेन, हिडगो

स्मृति संबल

- तिलोली निवासी श्रीमती तारादेवी (धर्मपत्नी लादूलालजी बाफना) का देहावसान हो गया। आप धार्मिक वृत्तिवाली श्राविका थी। प्रतिदिन माला, सामायिक आदि का क्रम निरंतर चलता था। तिलोली ग्राम तथा आसपास विचरणशील अथवा चतुर्मासरत चारित्रात्माओं की सेवा उपासना में अग्रणी रहती थी। महिला मंडल को अध्यक्षा/मंत्री के रूप में लंबे समय तक सेवाएं दी। विगत ५ वर्ष से १२ व्रतों का पालन एवं अब्रह्मचर्य का आजीवन त्याग था। आपके परिवार से साध्वीश्री दाखांजी धर्मसंघ में साधनारत हैं। प्रारंभिक दिनों में संघर्षों को सहन कर अपने पूरे परिवार में धर्म के गहरे संस्कार भरे। पूरे बाफना परिवार में संघ एवं संघपति के प्रति अटूट आस्था है।
- अडसीपुरा निवासी कामरेज प्रवासी श्री भंवरलालजी सुतरिया का निधन हो गया। वे सरल, मृदुभाषी, श्रमशील, सहनशील एवं व्यवहार कुशल श्रावक थे। धर्म में गहरी रुचि थी। तपस्या के प्रति अच्छा आकर्षण था। अनेक तेले, पंचोले एवं अठाईयां आदि का प्रत्याख्यान कर आत्मा के कर्मबंधों को तोड़ा। प्रतिदिन सामायिक का नियम था। अडसीपुरा सभा के सभाध्यक्ष एवं सरपंच के रूप में भी अपनी सेवाएं दी। सुतरिया परिवार में देव, गुरु और धर्म के प्रति गहरी आस्था है। उनके पुत्र तेरापंथी सभा, युवक परिषद में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय है।

स्मारणा

- नववर्ष आदि के प्रसंग में रात्रि में १२ बजे के आसपास मंगलपाठ आदि न सुनाएं।

(अनुशासन संहिता : चारित्रात्मा समुदाय--१३/३/२४)

- १ जनवरी (नववर्ष प्रारंभ) का मंगलपाठ-कार्यक्रम स्थानीय स्तर पर आयोजित किया जा सकता है। किन्तु उस कार्यक्रम में स्थानीय लोगों के सिवाय किसी को आमंत्रित न किया जाए।

(श्रावक संदेशिका, धारा २३५)

पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ फोन नं-०७३८४४३६५७२, ०६७८४४०७४६१
दिल्ली कार्यालय का नं.-२३२३४६४१, ६३१०२३४६४१

●

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-६, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी